



“अथ श्री नृसिंह अष्टक”

दो. श्री नरहरि पद कमल रज, वन्दन करि कर जोर

अभय करन दानव दलन, रिपुकुल दहन सुघोर
अष्टक वरनन करत हों भक्तन राखन काज
जिमि राख्यौ प्रह्लाद तुम तिमि राखहु मम लाज
उग्रवीर नरसिंह रूप भय हारन हारे,
ज्वालाजिन्ह भयानकाश्य नखदर चक्रधारे
मानिक गिरी सम प्रभावान चहुमुख भद्र कारे,
खम्भ फारि भये प्रगट, रमा नरसिंह हमारे
विकट दाढ अति लाल त्रिलोचन धृत मणि भूषण,
शंकुकर्ण अस्ट्ठहास निरासित रजनीचर गण
अंत्रमाल दितीपुत्र विदारण भक्त रखवारे,
महाविष्णु मृत्युमृत्यु रमानरसिंह हमारे
वज्रनरवर वज्रदंष्ट्र करमरंधन दुःख भर्जन,
सज्जन रंजन भगद मनोरथ पूरक गर्जन

भीषण हनु दनुवंश दहक पावक रसनारे,
क्षतजलिप्त नखपुंज रमानरसिंह हमारे
भूत-प्रेत-वैताल-विनायक-डाकिनि-शाकिन,
यन्त्र-मन्त्र-अरू-तन्त्र-यवनकृतकृत्य विनाशन
माया मर्दन शत्रुजनार्दन धर्मधुर धारे,
शरणागत द्रन्दमोक रमानरसिंह हमारे
धेनु विप्र सुरदुःख हरण करूणाकर देवा,
मंगल मूरत वरद भजत पावत मन मेवा
भक्तन सौभ्य औ घोर अभक्तन रूप निहारे,
कामदेन सुरविटप रमानरसिंह हमारे
चतुरानन त्रिपुरारि अहीसुर सुरपति वन्दित,
सिध्द-साध्य-वसु-चारण-किन्नर गण अभिनन्दित
वरदायक पालक सुरनायक नैनन तारे,

खल वन दहन कृशानु रमानरसिंह हमारे
जो ध्यावै नरहरि श्वरूप संकट के अवसर,
नाम रटै जय जय नरसिंह नरहरि निशिवासर
ताके आधि व्याधि सकल दुःखनाशन कारे,
करुणामय दीनवन्धु रमानरसिंह हमारे
जाके जन्तर मन्तर ते सब कारज होई,
ऋद्धि सिद्धि धनधाम लहैं सेवत हैं जोई
भक्ताभीष्ट प्रदायक भव भय हारन हारे,
विठ्ठल के प्रभु इष्ट रमानरसिंह हमारे
दो. अष्टक श्री नरसिंह कौं पाठ करें जो लोग
ताकों डर लागै नहीं पावै सुखमय भोग